अवतार मेहेरबाबा का विश्वव्यापी संदेश

"मैं सिखलाने के लिये नहीं बल्कि जगाने के लिये आया हूँ | इसलिये अच्छी तरह समझ लो कि मुझे कोई आचार नियम निर्धारित नहीं करने हैं |

सनातन काल से मैं सिद्धान्त और आचार-नियम निर्धारित करता आया हूँ, लेकिन मनुष्य ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया | ईश्वर के उपदेशों के अनुसार चलने में मनुष्य की असमर्थता अवतार के उपदेशों को उपहास बना देती है | उसकी सिखलाई हुई दयाभावना को व्यवहार में लाने के बजाय, मनुष्य उसके नाम पर लड़ाई-झगड़ा करता रहा है | उसके शब्दों से प्राप्त नम्रता, पवित्रता और सच्चाई को आचरण में लाने के बजाय मनुष्य ने वैर, लोभ-लालच और हिंसा का मार्ग अपनाया है |

चूँकि पुरातन काल में ईश्वर के निर्धारित किये हुये सिद्धान्तों और आचार-नियमो पर मनुष्य ने ध्यान नहीं दिया इसलिये मैंने अपने इस अवतारी स्वरूप में मौन धारण कर लिया है | तुमने उपदेशों की माँग की और तुम्हे यथेष्ट उपदेश दिये गये, लेकिन अब उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने का समय आ गया है | ईश्वर के निकट और बिल्कुल निकट पहुँचने के लिये तुम्हें "मै" "मेरा" और "मुझको" से दूर और बिल्कुल दूर हटना होगा | तुम्हें अपनी खुदी के अलावा और कुछ नहीं त्यागना है | यह बहुत ही सहज है, फिर भी यह प्राय: असम्भव सिध्द होता है | मेरी कृपा से ही तुम्हें अपनी सीमित खुदी को त्यागना सम्भव है | मैं उसी कृपा की धारा बहाने के लिये आया हूँ |

मैं फिर से दुहराता हूँ कि मुझे इस बार कोई आचार-नियम निर्धारित नहीं करने हैं | जब मैं सत्य की धारा बहाऊँगा, जिसको बहाने के लिये मैं आया हूँ तब, मनुष्यों के दैनिक जीवन खुद ही जीते-जागते उपदेश बन जायेंगे | जो शब्द मैंने मुख से नहीं निकाले वे उनमें जीवित होकर बोलेंगे |

मैं अपने को मनुष्य से उसके खुद के अज्ञान के पर्दे में छिपाये रखता हूँ और बिरले लोगों को ही अपना तेज प्रकट करता हूँ | मेरा मौजूदा 'अवतारी स्वरूप' इस कालचक्र का अन्तिम 'अवतार' हैं | इसलिये मेरा प्रकटीकरण भारी से भारी होगा | जब मैं अपना मौन खोलूंगा तो मेरे प्रेम की तरङ ब्रह्माण्ड भर में व्याप्त होगी और सृष्टि का प्रत्येक जीवधारी उसे जानेगा, महसूस करेगा और ग्रहण करेगा | उससे ऐसी सहायता मिलेगी कि हर कोई खुद के बनाये बन्धनों से अपने अपने तरीके से छुटकारा पाने में समर्थ होगा | मैं वह दैवी प्रियतम हूँ जो तुम्हें इतना अधिक प्यार करता है जितना तुम खुद भी अपने आप से नहीं कर सकते | मेरा मौन खुलने से तुम्हें ऐसी सहायता मिलेगी कि तुम अपनी खुदी को जानने में अपनी सहायता कर सकोगे |

सारे संसार में फैली यह सब गड़बड़ी और अन्धव्यवस्था अटल थी और इसके लिये कोई दोषी नहीं है | जो होना था वह हुआ, और जो होना है वह होकर ही रहेगा | तुम्हारे बीच मेरे आने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता न था और न है | मुझे आना था और मैं आ गया | मैं वही "पुरातन पुरूष" हूँ |